पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का व्यक्तित्व बहुआयामी था| वह सामान्य व्यक्ति, सक्रिय कार्यकर्ता, कुशल संगठक, प्रभावी नेता एवं मौलिक विचारक थे| वह एक साथ ही समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, राजनीति विज्ञानी एवं दार्शनिक थे| किसी भी विषय पर अच्छी प्रकार से अभ्यास और विभिन्न दृष्टियों से उस पर विचार करने के उपरांत ही वे अपना मत बनाते थे |
इनके पिता का नाम भगवती प्रसाद उपाध्याय था। ये नगला चंद्रभान (फरह, मथुरा) के निवासी थे | उनकी माता का नाम रामप्यारी था, जो कि धार्मिक प्रवृत्ति की थी। पिता रेल्वे में जलेसर रोड स्टेशन पर सहायक स्टेशन मास्टर थे | पंडित दीनदयालजी का जन्म २५ सितम्बर १९१६ को हुआ था | पंडित दीनदयालजी के छोटे भाई का नाम शिवदयाल था । उस समय उनके नाना चुन्नीलाल शुक्ल धानक्या (जयपुर) में स्टेशन मास्टर थे।दीनदयाल जी की माता श्रीमती रामप्यारीजी का अधिकांश समय अपने पिता चुन्नीलालजी के पास रहना होता था | दीनदयाल जी के नाना 1924 तक धानक्या रेलवे स्टेशन मास्टर रहे |दीनदयाल जी का शिशु काल अपने नाना चुन्नीलालजी के धानक्य रेलवे स्टेशन के क्वार्टर में व्यतीत हुआ |यहीं उनके शिशु काल के संस्कारसृष्टि पल्लवित हुई |

पंडित दीनदयालजी उपाध्याय ने चलना ,फिरना व बोलना धानक्या में अपने नानाजी के रेलवे क्वार्टर में ही सीखा |दीनदयाल जी का अक्षर ज्ञान व प्रारम्भिक शिक्षा अपने नाना चुन्नीलाल जी से धानक्या के रेलवे क्वार्टर में प्राप्त किया |

दीनदयालजी जब ३ वर्ष के थे, तब उनके पिता का देहांत हो गया। पति की मृत्यु से माँ रामप्यारी को अपना जीवन अंधकारमय लगने लगा। वे अत्यधिक बीमार रहने लगीं। उन्हें क्षय रोग हो गया और ८ अगस्त १९२४ को उनका भी देहावसान हो गया। उस समय दीनदयाल ७ वर्ष के थे।

दीनदयाल जी अत्यधिक विनम्र स्वभाव के थे और नित्य प्रति अपने नाना के साथ धानक्या रेलवे स्टेशन के सामने स्थित मंदिर में जाया करते थे |दीनदयाल जी शिशु काल से ही उनके मामा राधारमणजी अत्यधिक स्नेह करते थे |वह धानक्या के रेलवे क्वार्टर में उनके नाना चुन्नीलाल जी 1924 में सेवानिवृत होने तक रेलवे क्वार्टर में ही रहे |

दीनदयाल जी के नाना 1924 में धानक्या से सेवा निवृत हो गए और वे मामा श्री राधा रमण जी के साथ रहने लगे |दीन दयालजी की मामी भी उनसे बहुत स्नेह रखती थी |दीनदयाल जी को सबसे पहले गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर)के रेलवे विद्यालय में मामा

राधारमणजी ने भर्ती कराया |थोड़े दिन बाद ही राधारमन जी का वहाँ से स्थानांतरण हो गया |

इसके पश्चात अपने मामा राधा रमण जी के साथ कोटा मामा राम जी के साथ कोटा विद्यालय अध्ययन हेतु चले गए| इसके पश्चात वे अपने चचेरे मामा नारायण लाल जी के साथ राजगढ़ अलवर पढ़ने के लिए चले गए| इसके पश्चात दीनदयाल जी के मामा नारायण लाल जी का स्थानांतरण सीकर हो गया| सीकर में 1934 में दसवीं की परीक्षा श्री कल्याण हाई स्कूल में पढ़कर अजमेर बोर्ड से दी| दीनदयाल जी अजमेर बोर्ड में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया| उनकी परीक्षा में 10 प्रश्नों में से 5 प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कहां गया परंतु दीनदयाल जी ने सभी 10 प्रश्नों उत्तर लिख दिया और नोट लगाया कोई पांच उत्तर जांच ले| दीनदयाल जी की उत्तर पुस्तिका कई वर्षों तक छात्रों के देखने के लिए सुरक्षित रखी गई| सीकर के महाराजा श्री कल्याण सिंह जी ने दीनदयाल जी को स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया|
इसके पश्चात दीनदयाल जी इंटरमिडियट की पढ़ाई के लिए पिलानी गए आपने 1936 में वहां इंटरमीडिएट की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया| सेठ घनश्याम दास बिरला ने उन्हें स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया| दीनदयाल जी आगे की पढ़ाई के लिए कानपुर चले गए| पंडित दीनदयाल जी का लगभग 20 वर्ष की आयु तक का जीवन राजस्थान में व्यतीत हुआ|
दीनदयाल जी की उच्च शिक्षा कानपुर में प्रारंभ हुई| कानपुर में उनका संपर्क नानाजी देशमुख , सुंदर सिंह भंडारी जी से हुआ| श्री भाऊराव जी देवरस के संपर्क में आने पर वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बन गए| दीनदयाल जी की आगे की शिक्षाआगरा में प्रारंभ हुई |
दीनदयाल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ केपूर्ण कालीन प्रचारक बन गए|

सन १९५१ में अखिल भारतीय जनसंघ का निर्माण होने पर वे उसके संगठन मन्त्री बनाये गये। दो वर्ष बाद सन् १९५३ में वे अखिल भारतीय जनसंघ के महामन्त्री निर्वाचित हुए और लगभग १५ वर्ष तक इस पद पर रहे। कालीकट अधिवेशन (दिसम्बर १९६७) में वे अखिल भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

दीनदयाल उपाध्याय जनसंघ के राष्ट्रजीवन दर्शन के निर्माता माने जाते हैं। उनका उद्देश्य स्वतंत्रता की पुर्नरचना के प्रयासों के लिए विशुद्ध भारतीय तत्व-दृष्टि प्रदान करना था। उन्होंने भारत की सनातन विचारधारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए एकात्म मानववाद की विचारधारा दी। उन्हें जनसंघ के आर्थिक नीति के रचनाकार बताया जाता है तथा उन्होने एकात्म अर्थनीति की अवधारणा दी । उनका विचार था कि आर्थिक विकास का मुख्य उद्देश्य सामान्य मानव का सुख है अतः सभी की मूल आवश्यकताएँ रोटी,कपड़ा ,मकान ,पढ़ाई एवं दवाई पूरी होनी ही चाहिए । संस्कृतिनिष्ठा उपाध्याय के द्वारा निर्मित राजनैतिक

जीवनदर्शन के पहले सूत्र के रूप में वह कहते थे **" भारत में रहने वाला और इसके प्रति ममत्व की भावना रखने वाला मानव समूह एक जन हैं। उनकी जीवन प्रणाली, कला, साहित्य, दर्शन सब भारतीय संस्कृति है। इसलिए भारतीय राष्ट्रवाद का आधार यह संस्कृति है। इस संस्कृति में निष्ठा रहे तभी भारत एकात्म रहेगा ."**

जिस राष्ट्र मंदिर का निर्माण इतने दिनों से अनेक आत्म विजयी ऋषि मुनि , दिग्विजयी सम्राट, कवि, कलाकार, साहित्यकार, स्मृति कार, पुराणों के रचयिता, तथा धर्मशास्त्रों के प्रणेता करते चले आ रहे थे उस मंदिर में राष्ट्रपुरुष की मूर्ति स्थापित करने तथा उस मंदिर के प्रथम पुजारी बनने का हमें निमंत्रण देकर वह ११ फरवरी १९६८ की रात में रेलयात्रा के दौरान मुगलसराय के आसपास संदिग्ध स्थिति में इस दुनिया को छोड़ गए |